International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 10; October 2016; Page No. 219-221

गांधी दृष्टि और पर्यावरण विमर्श

शंभू जोशी

असिस्टेंट प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

अस्तित्वमूलक एकता (Existential Oneness) का विचार महात्मा गांधी के चिंतन का प्रस्थान बिन्दु है। यही प्रस्थान बिंदु वैज्ञानिक नियम के रूप में अहिंसा को अभिव्यक्त करता है। गांधीजी के पर्यावरणध्प्रकृति संबंधी विचार ऊपरी तौर पर सहज एवं सरल प्रतीत होते हों परन्तु उनमें विकास और पर्यावरण, गांव और शहर जैसे कई विमर्श अन्तर्भूत हैं। इन्हें नजरअंदाज करना गांधीजी के पर्यावरण/प्रकृति संबंधी विचारों को एकांगी बनाना होगा। यह आलेख गांधीजी के पर्यावरणध्प्रकृति संबंधी विचारों को स्पष्ट करते हुए उनमें अन्तर्भूत बहसों को सामने रखने का प्रयास करेगा। साथ ही यह आलेख अन्य पर्यावरण/प्रकृति संबंधी विचारों और आंदोलनों पर गांधीजी के पड़ने वाले प्रभावों को भी समाहित करने का प्रयास करेगा।

मूल शब्दः पर्यावरणवाद, महात्मा गांधी, जीवन शैली, अहिंसक दृष्टि

प्रस्तावना

एक पर्यावरणवादी होने के क्या अर्थ हैं? यह सवाल बहुत महत्वपूर्ण है। इसका कारण है कि हम पर्यावरणवादी होने की कुछ कसौटियां रखते हैं, जिनके आधार पर किसी को पर्यावरणवादी कहा जा सकता है या नहीं कहा जा सकता है। इन कसौटियों की प्रासंगिकता, अप्रासंगिकता इस विषय के विशेषज्ञों के लिए बहस का मुद्दा है। एक बात स्पष्ट तौर पर समझी जा सकती है कि आज के समय में जब हम पर्यावरण आंदोलन, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरणवाद इत्यादि की चर्चा कर रहे होते हैं तो हमारा सामना विकास की अवधारणा, शहरीकरण, औद्योगीकरण, तकनीक, ऊर्जा स्रोतों का दोहन, प्राकृतिक संसाधनों पर अधिकार इत्यादि से होता है। इस दृष्टि से यह माना जा सकता है कि एक पर्यावरणवादी कहलाने के लिए यह आवश्यक है कि इनमें से किसी एक विषय या कुछ विषयों पर ध्यान केंद्रित किया जाए।

जब हम पर्यावरणीय अवनति, प्रदूषण, वनों का विनाश, जैव विविधता को खतरा इत्यादि विषयों पर अपने विचार व्यक्त कर रहे होते हैं तब केवल लक्षणों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इन समस्याओं का मूल कहीं और तलाशा जाना चाहिए। मार्क्सवादी शब्दावली में कहा जाए तो अधिरचना (सुपरस्ट्रक्चर) को आधार (बेस) में परिवर्तन किए बिना नहीं सुलझाया जा सकता है। वैश्विक स्तर पर विगत कुछ दशकों, विशेषतः 1960–70, में पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर गहन विचार–विमर्श प्रारंभ किया गया। (कु) विकास के जिस प्रारूप को अधिकांश विश्व ने स्वीकार किया,उस पर पुनर्विचार किया गया क्योंकि उसकी पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक लागतें काफी गंभीर थी। यह पुनर्विचार दो स्तरों पर शुरू हुआ। एक स्तर पर विकास के प्रारूप को कम दुष्प्रभावी बनाने पर विचार किया गयाय दूसरे स्तर पर प्रचलित विकास के विकल्प की खोज की जाने लगी। दूसरे विकल्प के विचार को अपनाते हुए ऐसे दर्शनधविचार की खोज की जाने लगी जो इस पर्यावरणीय संकट को मूल स्तर पर समझने हेतु महत्वपूर्ण नजरिया प्रदान कर सके। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस खोज में महात्मा गांधी एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

महात्मा गांधी पर्यावरणवादी थे या नही? इस पर भी विद्वानों में काफी बहस रही है। यह आलेख इस बहस में शामिल नहीं होना चाहता है। हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि क्या महात्मा गांधी की कोई पर्यावरण दृष्टि थी? या गांधीजी ने पर्यावरण को किस नजरिए से देखा था? इन्हीं के आधार पर उनके पर्यावरण संबंधी विचारों को जाना जा सकता है।

गांधीजी की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनकी समग्रतामूलक दृष्टि (Integrated Approach) थी। उनके लिए जीवन समग्रता में है, अतएव जीवन की बुनियाद भी एक है, उसका नियमन करने वाला नियम भी एक है। वह मानव और मानवेतर जगत के एकत्व में विश्वास करते है जिसे उनकी 'अस्तित्वमूलक दृष्टि' कहा जा सकता है। सम्पूर्ण प्रकृति के प्रति उनकी एकात्म दृष्टि को निम्नानुसार स्पष्ट किया जा सकता है।

''मैं अद्वैत में विश्वास करता हूँय मैं मनुष्य की मूलभूत एकता में भी और केवल मनुष्यों की ही क्यों सभी जीवधारियों की एकता में विश्वास करता हूँ। इस कारण मेरा तो ऐसा यकीन है कि एक मनुष्य के अधरूपतन के साथ इस हद तक सारे संसार की अधोगति होती है।''

''मैं केवल मानवों के साथ ही तादात्म्य अथवा बंधुत्व स्थापित करना नहीं चाहता अपितु पृथ्वी पर रेंगने वाले कीड़ों–मकोड़ों के साथ भी तादात्म्य अथवा बंधुत्व स्थापित करना चाहता हूँ।... क्योंकि हम सभी उसी ईश्वर की संतान है और इसलिए जीवन जिस रूप में भी दिखाई देता है, तत्वतः एक होना चाहिए।''

उपर्युक्त उदाहरण स्पष्ट करते हैं कि उनके अनुसार जीवन तत्वतः एक ही है। यह विज्ञान सम्मत तर्क भी है। अतएव नैतिक एवं वैज्ञानिक दृष्टि से वही जीवन दृष्टि एवं शैली उचित कही जा सकती है जो इस एकत्व को पुष्ट करती हो। महात्मा गांधी इस तात्विक एकता को ही सत्य मानते हैं और अहिंसा को इस सत्य की प्राप्ति का व्यावहारिक माध्यम। प्रो. नंदकिशोर आचार्य ने सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह के आयाम को विस्तार देते हुए बताया कि अस्तित्व के एकत्व का व्यावहारिक स्वरूप अहिंसा के रूप में ही अभिव्यक्त हो सकता है। अहिंसा की इस सनातनता का आग्रह ही सत्याग्रह है अतः सत्याग्रह 'अन्य' के प्रति 'स्व' का उत्तरदायित्व है और साथ ही 'स्व' की तलाश भी है। यही अद्वैत है अतः गांधीजी के अर्थशास्त्र, समाज, राज्य और संस्कृति सत्याग्रही स्वरूप लिए है। सार रूप में यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि यह 'स्वानुभूति' की तलाश 'अन्य' के प्रति उत्तरदायित्व पूर्ण बोध ही गांधीजी की पर्यावरणीय दृष्टि का एक महत्वपूर्ण अंग है।

गांधीजी की दृष्टि मनुष्यकेंद्रिदता (एथनोपोसेंट्रिक) से बिल्कुल विपरीत थी। वह मनुष्य को प्रकृति का ही अंग मानते थे, उसका स्वामी नहीं। अतः उनके लिए यह विचार बिल्कुल असहज नहीं था कि प्रकृति मनुष्य के उपभोग के लिए नहीं है। वह मनुष्य और मनुष्येतर जगत के समान अधिकार को स्वीकार करते हुए कहते हैं।

''मैं यह अवश्य मानता हूँ कि ईश्वर की सृष्टि के समस्त प्राणियों को जीने का उतना ही अधिकार है जितना हमें।''

''भविष्य के मापदण्ड में केवल मानव जाति का नहीं, समस्त प्राणि जगत का ख्याल रखा जायेगा और जिस प्रकार अब हम धीरे–धीरेय लेकिन निश्चित रूप से इस फैसले पर आ रहे हैं कि यह समझना गलत है कि हिंदू अपनी संख्या के पॉचवे हिस्से को निकृष्ट मानने पर भी उन्नति कर सकते हैं या पश्चिम के देश पूर्वी और अफ्रीकी राष्ट्रों को शोषित और पददलित करने उसके सहारे जी तथा उन्नति कर सकते हैं, उसी तरह हमें समय आने पर यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि सृष्टि के निम्नतर प्राणियों पर हमारा प्रभुत्व इसलिए नहीं है कि हम उन्हें मार डालें,बल्कि वह हमारे और उनके पारस्परिक हित–संवर्धन के लिए हैं। मैं यह निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि ईश्वर ने उन प्राणियों को भी वैसी ही आत्मा दी है जैसी कि मुझे।''

मनुष्य और मनुष्येतर जगत के समान अधिकार का तर्क एक महत्वपूर्ण पर्यावरणीय दृष्टि है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि प्रकृति के विकास में मनुष्य में चेतना की अब तक की सर्वोच्च अभिव्यक्ति हुई है। मनुष्य ही उचित–अनुचित, विवेक–अविवेक को तय कर सकता है अतः उसकी जिम्मेदारी ज्यादा हो जाती है। यह महत्वपूर्ण स्थिति दो तरह के विचारों को प्रकट करती है।

1. एक, चेतना की सर्वोच्च अभिव्यक्ति होने के नाते मनुष्य को पूरा अधिकार है कि वह प्रकृति को अपने स्वार्थ के अनुसार प्रयोग करें, उसका शोषण करे।
2. दूसरे, चेतना की सर्वोच्च अभिव्यक्ति होने के नाते मनुष्य का दायित्व है कि वह अपनी प्रकृति की रक्षा करे और उनके समान अधिकार का सम्मान करे।

गांधी दृष्टि दूसरे विचार से साम्यता रखती है। जब मनुष्य अपनी श्रेष्ठता को एक उत्तरदायित्व के रूप में ग्रहण करता है तो वह सम्पूर्ण सृष्टि के प्रति एक नैतिक कर्तव्य को जन्म देता है। इसे हम नैतिकता का जैविकीय आधार (Biological root of Morality) भी कह सकते हैं। अहिंसा दृष्टि में यह नैतिकता का जैविकीय आधार अन्तर्निहित है। यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि गांधीजी की पर्यावरणदृष्टि का आधार उनका समग्रतामूलक दृष्टिकोण और तत्प्रसूत अहिंसा दृष्टि है। इसी से ही पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली का उद्भव होता है। यह संयोग मात्र नहीं है कि इसी अहिंसक पर्यावरणीयदृष्टि के कारण गांधीजी जिस जीवन शैली और विचार सरणी को स्वीकार करते हैं उसमें भी एकत्व मौजूद है। यही एकत्व स्वदेशी, विकेंद्रीकरण, सर्वोदय, गांवों को प्राथमिक इकाई मानने, लघु प्रौद्योगिकी अपनाने, ऊर्जा स्रोतों के संयत प्रयोगों इत्यादि के जरिए अभिव्यक्त होता है।

गांधीजी की अहिंसक पर्यावरणीय दृष्टि में अनेक अन्तर्दृष्टियां भी प्राप्त होती है जिनका सामना हमें आज भी करना पड़ रहा है। उन्होंने इंग्लैंड प्रवास के दौरान औद्योगीकरण के अभिशाप को देखा था जिसका वर्णन कई बार किया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि उपनिवेशवाद के कारण खतरे में पड़े पर्यावरण पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया। साम्राज्यवाद को संसाधनों के शोषण के साथ जोड़ कर देखा। भारत का उदाहरण उनके सामने मौजूद था जो इस शोषण का शिकार हो रहा था। उन्होंने चेतावनी दी कि संसाधनों का यह अंधाधुंध दोहन मानव अस्तित्व के लिए खतरा साबित होगा–

''ईश्वर न करे कि भारत कभी पश्चिमी ढ़ंग के उद्योगवाद को अपनाए। अगर तीस करोड़ की आबादी वाला समूचा राष्ट्र पश्चिमी ढ़ंग के आर्थिक शोषण पर उतर आए तो वह टिड्डी दल की तरह सारी दुनिया को चट कर जाएगा।''

गांधीजी के कथन का संदर्भ हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्र भारत में हमने उसी उद्योगवाद और आर्थिक शोषण को अपनाया जिसके प्रति गांधीजी ने आगाह किया था परिणामस्वरूप आंतरिक उपनिवेशवाद को जन्म दिया। इसमें देश में उपस्थित कमजोर समूहों को हमने विकास की 'अनिवार्य लागत' का हिस्सा बनाया। प्राकृतिक संसाधनों को लेकर चलने वाली लड़ाई का एक पक्ष पर्यावरण पर समान अधिकार की आवाज भी है। आम जनता की आजीविका की लड़ाई (struggle for right and justful livelihood) में गांधीजी ने सशक्त हस्तक्षेप किया जो पर्यावरणीय दृष्टि से भी अनुकूल था। उनके द्वारा प्रतिपादित चरखा और स्वदेशी ने (मशीनों द्वारा संसाधनों के अंधाधुध दोहन पर आधारित) व्यापक उत्पादन (मॉस– प्रोडक्शन) के स्थान पर लोगों के द्वारा लघु स्तर पर व्यापक उत्पादन (प्रोडक्शन बाय मासेज) को तरजीह दी, इसका एक सशक्त पर्यावरणीय पक्ष भी है।

आज न केवल गांवों और आदिवासी समूहों में अपितु शहरों में भी आम जनता व कमजोर समूह संसाधनों तक पहुँच से वंचित होते जा रहे हैं। संसाधनों के केंद्रीकरण के प्रति गांधीजी ने सीधी चेतावनी दी थी।

''मैं नगरों की बढ़वार को एक बुराई मानता हूँय यह मानव जाति और दुनिया के लिए दुर्भाग्य का विषय हैय यह इंग्लैंड और, निश्चित रूप से, भारत के लिए दुर्भाग्य का विषय है। अंग्रेजों ने शहरों के माध्यम से भारत का शोषण किया है। शहरों ने पलट कर गॉवों का शोषण किया है। शहरों का भवन– निर्माण गांवों की रक्तरूपी सीमेंट से हुआ है। मैं चाहता हूँ कि जो रक्त आज नगरों की धमनियों में बह रहा है, वह फिर एक बार गांवों की रक्तवाहिकाओं में बहने लगे।''

अपनी अहिंसक पर्यावरणीयदृष्टि के कारण गांधीजी ने एक ऐसी जीवन शैली के प्रयोग किए जिसमें गांव केंद्र में था। इसी को केंद्र बना कर 'महासागरीयवलय' की राष्ट्रीय परिकल्पना प्रस्तुत की। इसमें विकेंद्रीकरण, रचनात्मक कार्यक्रम, ग्रामोद्योग इत्यादि पर जोर था। इन सबका स्रोत तात्विक एकता में निहीत था।

गांधीजी की पर्यावरण दृष्टि का परवर्ती व समकालीन पर्यावरणीय विचारों एवं आंदोलनों पर असर देखना चाहते हैं तो इसका एक तरीका इन विचारों एवं आंदोलनों को उपर्युक्त बतायी गयी कसौटियों पर खरा उतरना होगा। अर्ने नेस्स (गहन पारिस्थितिकी), ई.एफ. शूमाकर इत्यादि के विचारों को गांधीजी की पर्यावरणीय दृष्टि का ही विस्तार कहा जा सकता है साथ ही विभिन्न पर्यावरणीय आंदोलनों, चाहे वे किसी भी मुद्दे को लेकर हो रहे हों, यदि वे जीवन की तात्विक एकता, विकेंद्रीकरण, स्थानीय आत्म निर्भरता, प्राकृतिक संसाधनों के सामूहिक प्रबंधन इत्यादि को अपना आधार बनाते हैं तो इन्हें गांधी दृष्टि के आंदोलन कहा जा सकता है।

सारतरू यह कहा जा सकता है कि गांधीजी की पर्यावरणीय दृष्टि का एक सशक्त तत्वमीमांसीय आधार है जो अस्तित्वमूलक एकता से सम्पुष्ट होता है। उनकी एक प्रसिद्ध उक्ति हर समय के लिए एक महत्वपूर्ण मार्गनिर्देशक है कि संसार में इतने संसाधन है कि वह प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूरी करने में समर्थ है किन्तु यह एक व्यक्ति के लालच के लिए भी पर्याप्त नहीं है।

संदर्भ ग्रर्थ

1. यंग इंडिया, 04–12–1924, पृ. 398।
2. यंग इंडिया, 04–04–1929, पृ. 107।

3. आचार्य, प्रो.नंदकिशोर, सभ्यता का विकल्प, वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर (2008), पृ. 9—11।
4. हरिजन, 09—0।—1937, पृ. 286।
5. यंग इंडिया, 17—12—1925, पृ. 440।
6. यंग इंडिया, 20—12—1928, पृ. 422।
7. हरिजन, 23—06—1946, पृ.198।